Unit – 2

बालक का नैतिक विकास (कोहलबर्ग के संदर्भ में) :-

नैतिक विकास का अर्थ :- सामान्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि व्यक्ति का सामाजिक मूल्यों एवं आदर्शों के अनुरूप व्यवहार करना ही नैतिक विकास कहलाता है। जैसे सामाजिक रीति-रिवाज, परम्पराओं और मान्यताओं के अनुरूप जीवन जीना।

अर्थात नैतिकता शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'नी' धातु से हुई है जिसका तात्पर्य होता है - मार्गदर्शन करना। चूँकि ऐसा भी माना जाता है कि नैतिकता शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Moralis' शब्द से हुई है जिसका अर्थ तौर-तरीका या चाल-चलन, चरित्र अथवा उचित व्यवहार है। अतः बालक का सामाजिक मूल्यों, मान्यताओं के अनुरूप व्यवहार करना तथा चारित्रिक विकास करना ही नैतिक विकास कहलाता है।

नैतिक विकास की परिभाषा :-

* **जोन्स के अनुसार :-** "निश्चित समाज या स्थान के आदर्शों के प्रति अनुरूपता का प्रदर्शन ही नैतिकता है।"
* **हरलॉक के अनुसार :-** "सामाजिक समूहों की नैतिक संहिता के प्रति अनुरूपता ही नैतिकता है।"
* **बैरोन के अनुसार :-** "नैतिक विकास से तात्पर्य बढ़ती उम्र के साथ विभिन्न क्रियाओं के सही या गलत होने के बारे में सोचने की क्षमता में परिवर्तन से होता है।"

बालक के नैतिक विकास की विशेषताएँ :-

(1) इससे बालकों में उचित - अनुचित तथा सही - गलत व्यवहारों का ज्ञान प्राप्त होता है।

(2) इससे बालकों में समाज के मूल्यों एवं परम्पराओं को स्थापित करने में सहायता प्राप्त होती है।

(3) इससे समाज द्वारा सीखे गये नियमों को आत्मसात करता है।

(4) इससे बालकों में सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक तथा सैद्धांतिक मूल्यों का विकास होता है।

(5) यह बालक का चारित्रिक विकास करता है।

* बालक के नैतिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक :-

- → परिवार
- → विद्यालय
- → पास - पड़ोस
- → धार्मिक संस्थाएं
- → क्लब
- → खेल - कूद
- → साथी - समूह
- → संस्कृति, परम्पराएं
- → बुद्धि
- → आयु

* बाल विकास के विभिन्न अवस्थाओं में नैतिक विकास :-

- → शैशवावस्था में नैतिक विकास।
- → बाल्यावस्था में नैतिक विकास।
- → किशोरावस्था में नैतिक विकास।

(1) शैशवावस्था में नैतिक विकास :- सामान्यतः शैशवावस्था जन्म से 5 वर्ष की अवस्था होती है जिसमें जन्म से 2 वर्ष तक की आयु वाले बालकों में नैतिकता का अभाव पाया जाता है।

चूँकि बालक की आयु जैसे-जैसे बढ़ती जाती है उनमें अच्छे-बुरे की पहचान उसके माता पिता के द्वारा होती है। इस अवस्था में उसके लिए प्यार एवं दण्ड ही नैतिकता होती है।

(2) बाल्यावस्था में नैतिक विकास :- बाल्यावस्था में बालक की आयु 6 से 12-13 वर्ष तक की होती है और वह विद्यालय जाना प्रारंभ कर देता है। इसप्रकार उनमें उचित-अनुचित, अच्छा-बुरा एवं सही-गलत के बारे में अंतर समझने लगता है क्योंकि तब वह विद्यालय में शिक्षकों द्वारा नैतिकता का पाठ पढ़ने लगता है साथ ही नैतिक मूल्यों को व्यवहार में लाने के अवसर भी उनको मिलते हैं।

(3) किशोरावस्था में नैतिक विकास :- किशोरावस्था में बालक पूर्ण रूप से सामाजिक आदर्शों के अनुरूप व्यवहार करने लगता है साथ ही अपने से बड़ों के आदर्शों को मानना, उनपर चलना तथा मान-सम्मान इत्यादि के अनुरूप व्यवहार करने लगता है।

इसप्रकार इस अवस्था में बालक समाज की व्यवस्थाओं को समझना, सही, गलत, उचित-अनुचित इत्यादि को जानकर जीवन-क्रियाओं को करते हुए नैतिकता को प्रदर्शित करता है।

(जन्म 1927 - 1987 ई० मृत्यु)

नैतिक विकास का सिद्धांत (कोहलबर्ग के संदर्भ में)

नैतिक विकास सिद्धांत ऐतिहासिक रूप से देखा जाये तो नैतिक विकास सिद्धांत का प्रतिपादन तीन प्रमुख दार्शनिकों ने किया था, जिसमें सर्वप्रथम संत ऑगस्टाइन (354 - 430 ई०) जो धर्म विज्ञानी थे दूसरे दार्शनिक जॉन लॉक तथा तिसरे जीन जेम्स रूसो थे। इन तीनो दार्शनिकों ने नैतिकता संबंधि अपना अलग - अलग विचार प्रस्तुत किये परन्तु आधुनिक विचारधारा के अनुसार लॉरेंस कोहलबर्ग जो एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे इन्होंने पूर्व में जिन पियाजे के द्वारा किये गये नैतिक विकास सिद्धांत का विकसित एवं विस्तृत रूप प्रदान किया जो ~~कोहलब~~ कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत के नाम से जाना जाता है।

कोहलबर्ग ने नैतिक विकास सिद्धांत को तीन अवस्थाओं में बाँटा है — इन तीन अवस्थाओं में भी प्रत्येक स्तर में दो-दो अवस्थाएँ होती है अर्थात कोहलबर्ग ने यह बताने का प्रयास किया है कि प्रत्येक अवस्था का जो क्रम होता है वह निश्चित होता है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति में समान उम्र में यह अवस्थाएँ हो, यह जरूरी नहीं होता है। लेकिन प्रत्येक व्यक्ति एक अवस्था को छोड़कर दूसरी अवस्था में प्रवेश नहीं कर सकता है। तीनो अवस्थाएँ इस प्रकार है

कोहलबर्ग ने 10 से 16 वर्ष की आयु के बालकों के सम्मुख कहानियों के रूप में नैतिक दुविधाओं (Moral - DiLemmas) को प्रस्तुत किया तथा इन दुविधाओं पर आधारित साक्षात्कार लेकर बच्चों के नैतिकता के स्तर को मापा।

कोहलबर्ग ने अपने नैतिक विकास सिद्धांत को देने के क्रम में कई कहानियों के माध्यम से नैतिक उलझनों को दूर करने का प्रयास किया जिसमे सबसे प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय कहानी इस प्रकार से है —

यूरोप में एक महिला (कैंसर पिड़ित) मौत से जूझ रही थी। डॉ० ने कहा की एक ऐसी दवा है जिससे वो ठीक हो सकती है परन्तु जिसने उस दवा की खोज की है वो उस दवा के अधिक पैसे माँग रहा है लेकिन उस महिला का पति (हाईनेज) एक गरीब व्यक्ति था

— — — — — — — — — — — — — — — — —

— — — — — — अंत में हाइनेज ने उस दुकान का ताला तोड़कर उस दवा को चुरा लिया। इस प्रकार कोहलबर्ग ने इस कहानी के माध्यम से बच्चों में साक्षात्कार लिया और उनसे नैतिकता से संबंधित कुछ प्रश्नों का उत्तर देने को कहा —

(i) क्या हाइनेज का ऐसा करना चाहिए था ?

(ii) क्या उसका व्यवहार नैतिक रूप से सही था या गलत ?

(iii) उसने ऐसा क्यों किया ?

(iv) क्या यह एक पति का कर्तव्य है कि वह अपनी पत्नी की जान बचाने के लिए दवा चोरी करें ?

(v) क्या दवा बनाने वाले को यह अधिकार है कि वह उस दवा का ज्यादा पैसा मांगे ?

इस तरह कहानी तथा साक्षात्कार से प्राप्त अनुक्रियाओं (Response) का विश्लेषण करके कोहलबर्ग ने यह बताया की बालक में नैतिक विकास मूलतः तीन अवस्थाओं या स्तरों से होकर गुजरता है जिसमें प्रत्येक स्तर की दो-दो अवस्थाएं होती है।

कोलबर्ग का कहानी द्वारा लिये गये साक्षात्कार का निष्कर्ष :-

<u>नैतिक तर्कणा</u> :- सही-गलत उम्र के साथ-साथ बदलता रहता है।

* कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत की अवस्थाएँ :-

कोहलबर्ग ने अपने नैतिक विकास सिद्धांत को तीन चरणों में तथा कुल 6 स्तरों में विभाजित कि ——

(1) पूर्व-परम्परागत स्तर या प्राक् रूढ़िगत नैतिकता का स्तर (Pre-conventional Morality Level)
- Stage I (i) आज्ञा एवं दण्ड की अवस्था (Age- 2 से 4 वर्ष)
- Stage II (ii) अहंकार की अवस्था (4-7 वर्ष)

(2) परम्परागत नैतिकता या रूढ़िगत नैतिकता का स्तर (Conventional Morality Level)
- Stage III (i) प्रशंसा की अवस्था (7-8 वर्ष)
- Stage IV (ii) सामाजिक अनुरूपता (8-10 वर्ष)

(3) उत्तर परम्परागत स्तर या उत्तर रूढ़िगत नैतिकता का स्तर
- Stage V (i) सामाजिक सहमति की अवस्था (10-13 वर्ष)
- Stage VI (ii) विवेक की अवस्था (13-प्रौढ़ावस्था)

(1) पूर्व-परम्परागत नैतिकता या प्राक् रूढ़िगत नैतिकता का स्तर :-

यह अवस्था 4 वर्ष से लेकर 10 वर्ष की आयु तक होती है, इसमें बालक उचित - अनुचित का ज्ञान तथा उसके व्यवहारों से दूसरे के द्वारा मिलने वाली प्रतिक्रिया के आधार पर अपने नैतिकता को प्रदर्शित करता है।

इस अवस्था में बालक या तो डरकर या किसी लालचवश किसी कार्यों या बातों को करते हैं या मानते हैं। इसे दो स्तरों या सोपानों में विभाजित किया जाता है —

- (i) आज्ञा एवं दण्ड की अवस्था। (2-4 वर्ष)
- (ii) अहंकार की अवस्था। (4-7 वर्ष)

(i) आज्ञा एवं दण्ड की अवस्था :- इस अवस्था में माता-पिता या बड़ो से, बालक के अंदर डर या भय बना रहता है, वे अच्छे कार्यों के लिए प्रशंसा तथा पुरस्कार पाने की इच्छा रखते हैं। इसके अनुसार यदि हाइनेज ने दवा चुराई तो गलत किया।

(ii) अहंकार की अवस्था या आत्मअभिरुचि की अभिमुखता :- " इसमें बालक अपनी इच्छाओं तथा आवश्यकताओं या अपने अंदर उत्पन्न अहंकार के आधार पर नैतिक चिंतन करता है अर्थात इस आयु स्तर का बच्चा सही - गलत समझने लगता है।

(2) परम्परागत नैतिकता या रूढ़िगत नैतिकता का स्तर :-

यह अवस्था 10 से 13 वर्ष तक की होती है इस अवस्था के बालकों में जो नैतिक विकास देखने को मिलता है, उसका रूप परम्परागत ही होता है जो कि -

किसी भी कार्य को करने या वे अपने को अच्छा लड़का या अच्छी लड़की से संबोधित करना पसंद करते हैं। साथ ही अपनी इच्छाओं को ही सर्वोपरी मानते हैं अतः इसमें चिंतन, संज्ञान एवं योग्यताओं का विकास हो चुका होता है वे सामाजिक मूल्यों एवं आदर्शों के अनुरूप व्यवहारिक होते जाते हैं। इसे भी दो सोपानों में बाँटा गया है —

(i) प्रशंसा की अवस्था।

(ii) सामाजिक अनुरूपता।

(i) <u>प्रशंसा की अवस्था</u> :- इस अवस्था में बालक उन सभी कार्यों को नैतिक या अच्छा समझने लगता है जिससे उसे सामाजिक प्रशंसा या अनुमोदन मिले। इसप्रकार इस अवस्था में बच्चे के चिंतन का स्वरूप समाज और उसके परिवेश से निर्धारित होता है।

(ii) <u>सामाजिक अनुरूपता</u> :- इसमें बालक सामाजिक नियमों आदि के अनुरूप आचरण या व्यवहार करना ही नैतिकता समझता है तथा इसके विरुद्ध किये गये व्यवहार एवं कार्यों को अनैतिक या गलत समझता है।

(3) <u>उत्तर परम्परागत या उत्तर रूढ़िगत नैतिकता का स्तर</u>

:- यह अवस्था 13 वर्ष से प्रौढ़ावस्था तक चलती है। इसमें बालक, किशोर के रूप में नैतिक विकास के उच्चतम स्तर को छूने लगता है। साथ ही किशोर उन वैधानिक अधिकारों तथा नियमों का आदर करते हैं जो प्रजातांत्रिक रूप से मान्य होता है। उन्हें इस बात का विश्वास हो जाता है, कि

समाज का उत्तम कल्याण तब होता है जब समाज के लोग सामाजिक नियमो का आदरपूर्वक पालन करते है।

इसप्रकार इस अवस्था में किशोर दूसरे के विचारो तथा नैतिक प्रतिबंधो से स्वतंत्र होकर अपने आंतरिक मानको के अनुरूप व्यवहार करने लगता है - जैसे - व्यक्ति यह मानने लगता है कि समूह, समुदाय, समाज तथा सामाजिक संस्थाएं व्यक्ति के भलाई के लिए ही स्थापित होते है इसे भी दो उपअवस्थाओं में विभाजित किया गया है —

(i) सामाजिक सहमति की अवस्था

(ii) विवेक की अवस्था। —

(i) सामाजिक सहमति की अवस्था :- इसमें व्यक्ति समाज, समुदाय को रक्षा उपकरण के रूप में देखता है चूंकि समाज में रहकर ही व्यक्ति के हितों की रक्षा हो सकती है।

(ii) विवेक की अवस्था :- इसमें व्यक्ति अच्छा - बुरा नैतिक - अनैतिक, वांछनीय - अवांछनीय व्यवहारों के संबंध में अपने विवेक के आधार पर निर्णय लेता है।

इसप्रकार कोहलबर्ग ने अपने समग्र नैतिक अध्ययनो का विश्लेषण कर तीन निष्कर्ष निकाले है —

(i) बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक नैतिक तर्कणा प्राक् - रूढ़िगत या पूर्व परम्परागत से रूढ़िगत या परम्परागत स्तर में परिवर्तित होती है।

(ii) किशोरावस्था तथा व्यवस्कावस्था में भी उत्तर रूढ़िगत तर्कणा तुलनात्मक रूप से असमान्य होगी।

(iii) किसी व्यक्ति का नैतिक निर्णय किसी एक स्तर के भीतर की उसी अवस्था का प्रतिबिम्ब हमेशा नहीं करता है अर्थात सभी स्तरों में अपना अलग - अलग विचार प्रस्तुत करता है।

* कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत का शैक्षिक महत्व —

(i) बालकों का मनोविश्लेषण करके अध्यापक इस बात का पता लगा सकते हैं कि उनकी अभिरुचियाँ, क्षमताएँ या योग्यताएँ किस प्रकार की हैं। इस प्रकार वह बालक को उचित शिक्षा और सही निर्देशन दे सकता है।

(ii) बालक को सही कार्यों के प्रति प्रोत्साहित करके उसका पथ प्रदर्शन करता है।

(iii) बालकों को नैतिक मूल्यों का पालन करने तथा संतुलित व्यक्तित्व विकसित करने के लिए प्रेरणा देना चाहिए।

(iv) अध्यापकों को विभिन्न समुदायों के सदस्यों के साथ अच्छे सौहार्दपूर्ण संबंध बनाकर उनके सामने उच्च आदर्शों को प्रस्तुत करना चाहिए।

(v) अध्यापक का व्यक्तित्व विद्यार्थियों के लिए आदर्श व्यक्तित्व होता है अतः अध्यापकों को ईमानदारी, न्यायप्रियता तथा सत्यता जैसे गुणों से परिपूर्ण होना चाहिए।

— 0 —